

स्थिति 3. निकल भागने का मार्ग/रास्ता/ अपसरण 4. वैचारिक भिन्नता या भेद।

अपसौर वि. पुं. (तत्.) दे. रवि-उच्च।

अपस्कर पुं. (तत्.) 1. ढाँचा 2. पहिए को छोड़कर गाड़ी का शेष हिस्सा 3. विष्ठा, मल 4. योनि 5. गुदा।

अपस्तुति स्त्री. (तत्.) 1. निंदा 2. अनुचित, प्रशंसा विनो. स्तुति।

अपस्थानिक वि. (तत्.) गलत जगह से संबंधित।

अपस्थानिक कलिका स्त्री. (तत्.) कृषि. पौधे के अपसामान्य स्थान (जैसे जड़, पत्ती अथवा पौरी) से निकली कलिका।

अपस्थानिक जड़ स्त्री. (तत्.) कृषि अपने सामान्य स्थान को छोड़कर पौधे के अन्य स्थान से निकली हुई जड़।

अपस्नात वि. (तत्.) [अप+स्नात] 1. अशौच स्नान 2. दाह संस्कार के बाद स्नान किया हुआ 3. पहले से नहाये हुए जल में स्नान किया हुआ 4. अप स्नान किया हुआ, अपवित्र स्थान।

अपस्नान पुं. (तत्.) किसी संबंधी की मृत्यु के बाद किया जाने वाला स्नान, कृतक स्नान।

अपस्फोट-रोधी यौगिक पुं. (तत्.) रसा. पदार्थ जो आंतरिक दहन इंजन में प्रयुक्त पेट्रोल में मिलाए जाने पर विस्फोटन को मंद कर देता है और ऊर्जा-क्षय को कम करता है।

अपस्मार पुं. (तत्.) 1. मिर्गी, एक प्रकार का तंत्रिकीय रोग, जिसमें रोगी को दौरे पड़ते हैं और वह मूर्छित हो कर गिर पड़ता है 2. स्मरणशक्ति की हानि। epilepsy

अपस्मारी वि. (तत्.) 1. अपस्मार का रोगी, मिर्गी का रोगी 2. विस्मरणशील।

अपस्मृति वि. (तत्.) भुलक्कड़, भूल जानेवाला, स्मृतिभ्रष्ट, विभ्रमित स्त्री. (तत्.) खराब स्मरण शक्ति।

अपस्वर पुं. (तत्.) संगी. गलत स्वर, या ध्वनि।

अपस्वार्थ पुं. (तत्.) [अप+स्वार्थ] 1. तुच्छ स्वार्थ, केवल अपना स्वार्थ 2. अपना मतलब।

अपह वि. (तत्.) [अप+ह] [समासांत पद में प्रयुक्त होने वाला शब्द] किसी बात या चीज का निवारण या नाश करने वाला जैसे- मानापह (मान+अपह) वित्तापह (वित्त+अपह) वि. स्त्री. अंधकार+ऊपह=अंधकारापह। अंधकार को नष्ट करने वाली संशयापह (संशय+अपह) संशय का निवारण करने वाली कोई उक्ति।

अपहचाना वि. (तत्.) अपरिचित, जिस व्यक्ति या वस्तु का गुण-दोष जाना-पहचाना न हो। अनजान।

अपहन वि. (तत्.) (समस्त पद के अंत में प्रयुक्त) दूर करने वाला, हटानेवाला 2. पीछे कर देने वाला, नष्ट करने वाला उदा. दुःखापहन।

अपहनन पुं. (तत्.) 1. दूर करना, हटाना, पीछे हटाना 2. मारना।

अपहरण पुं. (तत्.) किसी व्यक्ति को बलात् उठा ले जाने की क्रिया। kidnapping

अपहरणीय वि. (तत्.) अपहरण योग्य।

अपहर्ता पुं. (तत्.) 1. अपहरण करनेवाला 2. छीननेवाला।

अपहसित वि. (तत्.) 1. जिसका उपहास किया गया हो, जिसका मजाक उड़ाया गया हो पुं व्यर्थ की हँसी, अशिष्टतापूर्ण हास्य। 2. असमय हास्य। 3. (नाट्य) हास्य का एक प्रकार जिसमें हँसते-हँसते आँख में आँसू आ जाते हैं या अन्य अंग जैसे हाथ गरदन आदि हिलने लगते हैं।

अपहानि स्त्री. (तत्.) प्रतिष्ठा, हित आदि को पहुँची हानि, हित का अभाव, अहित। harm

अपहानिकर वि. (तत्.) जिससे किसी को शारीरिक या मानसिक पीड़ा हो।

अपहार पुं. (तत्.) 1. चोरी, लूट, पराया माल उठा ले जाना 2. अपहरण।